राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी के विकास में राजस्थान का योगदान

18-19 जनवरी, 2025

:: आयोजक ::

हिन्दी विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

:: आयोजन स्थल ::

बृहस्पति भवन, केन्द्रीय कार्यालय

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय

रेजीडेन्सी रोड, जोधपुर

आमंत्रण

हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर **'हिन्दी के विकास में राजस्थान का योगदान'** विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी **18-19 जनवरी, 2025** में आपको आमंत्रित करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव करता है। भारतीय साहित्य और संस्कृति के प्रतिमान राजस्थान ने आदिकाल से ही साहित्यिक परम्परा को पुष्पित पल्लवित और संरक्षित करने में अपना योगदान दिया है। यहाँ का जैसा शौर्यमय इतिहास रहा है वैसा ही साहित्य। स्वतंत्र भाषा राजस्थानी होने के बावजूद भी राजस्थान के जन मानस ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक अपने तन-मन-धन से सींचा है यह यहाँ के आम जन की राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता और संकल्पना को दोहराता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास का पहला महाकाव्य जो सर्वाधिक चर्चित रहा है उसका नायक सम्राट पृथ्वीराज चौहान स्वयं अजमेर व दिल्ली का शासक रहा और उस महाकाव्य की कथावस्तु भी राजस्थान से जुड़ी हुई है।

इसी तरह आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को नाथों की बानियाँ तो जोधपुर के महामंदिर से प्राप्त हुई है। जैन साहित्य राजस्थान और गुजरात के सीमांत क्षेत्रों में रचा गया है और जिस पर शोध करने वाले अधिकारी विद्वान मुनि जिनविजय का सम्बन्ध राजस्थान से रहा। पं. गौरीशंकर हीराचंद ओझा जिन्होंने इतिहास की कई गुत्थियों को सुलझाया है। उन्होंने राजस्थान से ही अपनी साधना की है। कबीर की साखियों की भाषा राजस्थानी का पुट लिए है तो पीपा और दादू की कर्म स्थली भी राजस्थान रहा है।

महान भक्त कवयित्री मीरां तो मेड़ता की है जो आज विश्ववंदनीय है। 'पदमावत' जैसा महाकाव्य चित्तौड़ के राजा रत्नसेन पर ही रचा गया है। जिसका गोरा बादल युद्ध खण्ड, ऐतिहासिक आधार लिए हुए है। दादू का जन्म गुजरात में होते हुए भी कर्मस्थली राजस्थान के नारायणा सांभर रही है। निर्गुण धारा के सबसे विद्वान संत कवि सुंदरदास दौसा के थे। इसी तरह दादू के शिष्य रज्जब की भाषा पर राजस्थानी का प्रभाव है।

बिश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक संत जांभोजी ने राजस्थान से ही अपनी वाणी में संदेश दिया है। रसिक संप्रदाय के संस्थापक आचार्य अग्रदास का जन्म राजस्थान में ही हुआ है तथा उन्होंने अपनी मुख्य पीठ राजस्थान सीकर के रैवासा में ही स्थापित की । उन्हीं की शिष्य परम्परा में नाभादास ने 'भक्तमाल' जैसा महान ग्रंथ हिन्दी साहित्य को दिया ।

भक्ति और शृंगार का अद्भुत ग्रंथ 'वेलि क्रिसन रुकमणि री' के रचयिता प्रिथीराज राठौड़ बीकानेर के राज परिवार से थे। इसी तरह ढोला मारू रा दूहा भी राजस्थानी प्रेमाख्यान है। जिसका संग्रह जैसलमेर के राजा हरराज ने करवाया। । इसी तरह के ग्रन्थ राजस्थानी प्रेमाख्यान के और भी हैं जिन पर अध्ययन-अध्यापन एवं शोध की परम आवश्यकता है ।

मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह (1628-1678) का 'भाषा-भूषण' ग्रंथ रीति काल का महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है । रीतिकाल साहित्यिक दृष्टि से बड़ा समृद्ध रहा है जिसमें राजस्थान के योगदान को रेखांकित करने की जरूरत है ।

कवि वृन्द (1643-1723) मेड़ता के निवासी थे जो मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह और किशनगढ़ के राजा के आश्रित कवि रहे। रीति मुक्त कवि बिहारी ने (1595-1663) मिर्जा राजा जयसिंह (जयपुर) के दरबार में रहकर 'बिहारी सतसई' की रचना की इसी प्रकार रीतितर कवि सूदन भरतपुर के राजा सूरजमल के आश्रित कवि थे।

जोधराज ने नींव गढ़ (अलवर) के राजा चन्द्रभान चौहान की आज्ञा से 'हम्मीर रासो' नामक बृहद् प्रबंध काव्य रचा था। विश्व की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक 'उसने कहा था' के रचयिता चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जयपुर में पले बढ़े। गिरधर शर्मा नवरत्न ने भारतेन्दु काल में जयपुर से समालोचना पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन किया। सुप्रसिद्ध कथाकार रांगेय राघव, विजयदान देथा, राजस्थान से हैं। हिन्दी

साहित्य का इतिहास भाग 16 व परम्परा का संपादन कर (राजस्थान का लोक साहित्य) पर लेखन कर डॉ.नारायण सिंह भाटी ने ऐतिहासिक कार्य किया है।

तार सप्तक के सुप्रसिद्ध कवि नंदकिशोर आचार्य ने (बीकानेर) से रहकर हिन्दी के भंडार में श्री वृद्धि की। इसी प्रकार ऐतिहासिक कहानीकार कुंवर आयुवान सिंह, ऋतुराज, मणिमधुकर, डॉ.सत्यनारायण, सवाई सिंह शेखावत, गोविन्द माथुर और लोक साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले डॉ.सत्येन्द्र, कन्हैयालाल सहल, मनोहर शर्मा, देवीलाल सामर, रानी लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत, कोमल कोठारी, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ.जयपाल सिंह राठौड़ के नाम उल्लेखनीय है।

ये तो केवल चुनिंदा नाम ही हैं। राजस्थान के रचनाकारों ने हिन्दी भाषा और साहित्य के भंडार में श्री वृद्धि की है। यहाँ होने वाले शोध कार्यों ने हिन्दी क्षेत्र में नयी दिशा प्रदान की है। नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी से प्रकाशित ग्रंथ मालाओं को यहाँ के उदारमना शासकों व व्यापारिक घरानों ने आर्थिक सहायता प्रदान की है। जिसके ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध हैं ।

हिन्दी का अभिप्राय किसी प्रदेश विशेष की भाषा और उसको बोलने वाले लोगो से ही नहीं हैं राजस्थान का स्वतंत्र अस्तित्व होते हुए भी उसने हिन्दी का मार्ग प्रशस्त किया है। भाषाई आधार पर किसी प्रकार की राजनैतिक चाल न चल कर राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का परिचय दिया है ।

इसलिए उसके योगदान को हम सहर्ष स्वीकार कर इतिहास लेखन में उसके योगदान का उल्लेख करें केवल हिन्दी साहित्य परम्परा को पोषित करने का श्रेय क्षेत्र विशेष को न देकर उन रचनाकारों व उनकी रचनाओं को भी दिया जाये उन्हें पाठ्यक्रम से जोड़े और उन पर नवीन शोध कर अध्ययन प्रस्तुत किया जायें ताकि राजस्थान के योगदान को कमतर न आंका जा सकें।

उप विषय -

- हिन्दी के उद्भव और विकास में राजस्थान की भूमिका
- रासो-काव्य धारा
- वेलि-काव्य धारा
- गीत- काव्य धारा
- रीति काव्य धारा
- भक्ति काव्य धारा
- संत काव्य धारा
- जैन काव्य धारा
- लोक काव्य धारा
- राष्ट्रीय काव्य धारा
- योगदान का समग्र मूल्यांकन
- गद्य विधाओं के विकास में राजस्थान का योगदान

शोध पत्र आमंत्रण

राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु स्तरीय शोधपत्र आमन्त्रित किये जाते है। शोध पत्र सारांश (Abstract) Double spacing Kruti Dev 10 (Font Size 14) में पत्र में शीर्षक, संक्षिप्त परिचय व पासपोर्ट साइज फोटो एवं संदर्भ सहित ई-मेल msdhabar@gmail.com 10 जनवरी 2025 तक प्रेषित करें। संगोष्ठी के पश्चात् सम्पादक मण्डल द्वारा चयनित स्तरीय शोध पत्रों को ISBN युक्त पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है।

Registration Link :

Bank Detail

A/c No. : 05710100012570

IFSC Code : BARB0UNIJOD
(Fifth Character is Zero)

पंजीकरण शुल्क	
शिक्षाविद्/शिक्षक	1000/-
शोधार्थी	700/-

भुगतान अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के पक्ष में बैंक ऑफ बड़ौदा, विश्वविद्यालय परिसर शाखा, जोधपुर को करें।

प्रधान संरक्षक

प्रो. के.एल. श्रीवास्तव

माननीय कुलपति

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

संरक्षक

प्रो. मंगलाराम बिश्नोई

अधिष्ठाता

कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

आयोजन सचिव

प्रो. महीपाल सिंह राठौड़

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

मो. 94133 23330

सह सचिव

डॉ. महेन्द्र सिंह

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

मो. 94605 33690

हिन्दी विभाग

प्रो. किशोरीलाल रैगर

डॉ. श्रवण कुमार

डॉ. कुलदीपसिंह मीना

डॉ. कीर्ति माहेश्वरी

डॉ. प्रेम सिंह

डॉ. कामिनी ओझा

डॉ. विनिता चौहान

डॉ. मीता सोलंकी

डॉ. कमला चौधरी

डॉ. भरत कुमार

डॉ. प्रवीण चन्द

डॉ. अरविन्द कुमार जोशी